लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 550

03 फरवरी, 2026 को उत्तर दिए जाने के लिए

वस्त्र मंत्रियों का राष्ट्रीय सम्मेलन

550. श्री चव्हाण रविन्द्र वसंतराव:

श्री सुधीर गुप्ता;

श्री धैर्यशील संभाजीराव माणे:

क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या हाल ही में गुवाहाटी में वस्त्र मंत्रियों का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया था और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इसके उद्देश्य और लक्ष्य क्या हैं;

(ख) सम्मेलन के दौरान चर्चा किए गए प्रमुख विषयों और प्रमुख नीतिगत विचार-विमर्श का ब्यौरा क्या है;

(ग) सम्मेलन के दौरान सरकार द्वारा लिए गए संकल्पों, कार्यवाही संबंधी बिंदुओं या आम सहमति से लिए गए निर्णयों का ब्यौरा क्या है और वस्त्र क्षेत्र के विकास के लिए क्या भावी रूपरेखा प्रस्तावित की गई; और

(घ) सरकार द्वारा राज्य सरकारों और अन्य हितधारकों के समन्वय से सम्मेलन के परिणामों को लागू करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं या उठाए जाने का प्रस्ताव हैं?

उत्तर

वस्त्र राज्य मंत्री

(श्री पबित्र मार्घेरिटा)

(क): जी, हाँ। दिनांक 8-9 जनवरी 2026 को गुवाहाटी, असम में राष्ट्रीय वस्त्र मंत्रियों का सम्मेलन आयोजित किया गया था। इसका आयोजन वस्त्र मंत्रालय द्वारा "इंडियास टेक्सटाइल्स: वीविंग ग्रोथ, हैरिटेज एंड इनोवेशन" विषय पर किया गया था। इस सम्मेलन में केंद्रीय और राज्य वस्त्र मंत्री और वरिष्ठ अधिकारी भारत के वस्त्र क्षेत्र को मजबूत करने और देश को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करने पर विचार-विमर्श करने के लिए एक साथ आए।

(ख): अन्य बातों के अलावा, चर्चा किए गए मुख्य विषय थे, अवसंरचना, निवेश और विनिर्माण और सस्टेनेबिलिटी; भारत के वस्त्रों के निर्यात, प्रतिस्पर्धा और ब्रांडिंग का विस्तार; कच्ची सामग्री और फाइबर; तकनीकी वस्त्र और न्यू एज फाइबर्स; और पारंपरिक वस्त्र और हस्तशिल्प।

(ग): राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मंत्रियों और अधिकारियों की प्रतिभागिता के साथ राष्ट्रीय वस्त्र मंत्रियों का सम्मेलन दो दिनों के व्यापक विचार-विमर्श के बाद गुवाहाटी में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में निम्नलिखित निर्णय लिए गए:

i. वस्त्र योजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए केंद्र-राज्य समन्वय को मजबूत करना;
ii. प्रमुख कार्यक्रमों के तहत अवसंरचना के विकास और प्रौद्योगिकी उन्नयन में तेजी लाना;
iii. भारत के वस्त्रों की प्रतिस्पर्धा और ब्रांडिंग के माध्यम से वर्ष 2030 तक और अधिक वस्त्र निर्यात प्राप्त करने की दिशा में सामूहिक रूप से काम करना;
iv. पारंपरिक वस्त्रों, हथकरघा और हस्तशिल्प का संरक्षण और प्रचार करना, कारीगरों और बुनकरों के लिए बाजार पहुंच, मूल्यवर्धन और आजीविका सुनिश्चित करना;
v. वस्त्र मूल्य श्रृंखला में सस्टेनेबिलिटी और नवाचार को एकीकृत करना; और
vi. इसके परिणाम पॉलिसी कन्वर्जेंस, निवेश संवर्धन और भारत के वस्त्र क्षेत्र के समग्र विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो भारत को एक ग्लोबल टेक्सटाइल्स हब बनाने के लिए एक रोडमैप तैयार करता है।

(घ): सरकार, राज्यों और हितधारकों के समन्वय से, अवसंरचना, प्रौद्योगिकी उन्नयन, कौशल विकास, सस्टेनेबिलिटी पहलों और भारत के वस्त्रों के निर्यात में तेजी ला रही है।

***